एस.एस. कॉलेज जहानाबाद,
विभाग - हिन्दी
विषय - हिन्दी रचना पत्र
वर्ग - स्नातक भाग - 1
शिक्षण माध्यम - वाट्स- एप
समय - 11 बजे से 12 बजे तक — 17.8.20
शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा
पाठ - पल्लवन

प्रिय छात्र- छात्राएँ !

पल्लवन संक्षेपण का उल्टा है यहाँ भावों अथवा विचारों को संक्षिप्त करने की जगह विस्तार किया जाता है। सूत्रवाक्य जिसमें कई भाव और विचार संगुम्फित रहते हैं उसे स्पष्टतः खोलने अथवा विस्तारित करने को पल्लवन कहते हैं। जैसे: 'साहित्य समाज का दर्पण है'। इस सूत्रवाक्य को पल्लवित करना व्याख्या करना इस रूप में समीचीन होता है कि इसमें संगुम्फित साहित्य, समाज के संबंधों को परत-दर-परत खोलकर रख देना तथा सूत्रवाक्य के अर्थ स्पष्ट नहीं होने की स्थिति में अर्थों का विस्तार देकर उनके अर्थ स्पष्ट किये जाते हैं, इसी क्रिया को पल्लवन कहते हैं।

पल्लवन और व्याख्या में भी अंतर है। पल्लवन और व्याख्या दोनों में सन्निहित भाव अथवा विचार का विस्तार होता है; किन्तु पल्लवन में जहाँ केवल निहित भाव का विस्तार होता है, वहाँ व्याख्या में प्रसंगनिर्देश के साथ आलोचना तथा टीका-टिप्पणी के

लिए भी समान सुरक्षित है। यह दूर पल्लवन में नहीं है। पल्लवन और भावार्थ के अन्तर को भी समझना चाहिए। पल्लवन और भावार्थ दोनों में निहित मूल भाव को स्पष्ट किया जाता है। किन्तु भावार्थ में भाव विस्तार की एक सीमा होती है जबकि पल्लवन में ऐसा कोई बन्धन नहीं है। यहाँ निहित अनुच्छेदों में तबतक लिखा जा सकेगा जबतक मूल लेखक के समस्त मनोभाव पूरी तरह स्पष्ट न हो जाय। जैसे एक बीज व्यक्ति में समस्त मानवीय गुण एवं दोष निहित रहते हैं, उसे खोलना या स्पष्ट करना पल्लवन और भावार्थ दोनों के अन्तर्गत आते हैं, परन्तु बीज में विराट् का अस्तित्व छिपा होना और उसकी व्याख्या में जाकर अपरिमित रहस्यों का उद्घाटन भी पल्लवन में होता है। यह लेखक की क्षमता पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार पल्लवित-पोषित कर उसके भीतर निहित विराट् तत्त्व को खोलता है। राजा बलि और 'वामन' ब्राह्मण के रूप विष्णु भगवान की कथा में बीज से विराट् होकर उसके नये-नये अर्थ खोलने का कार्य पल्लवन द्वारा ही संभव होता है।

अध्ययन की सुविधा के लिए पल्लवन के भी कुछ नियम हैं इसे अगली कक्षा में प्रस्तुत किया जायेगा।

(मिश्रा जी)

17.8.2020